Az – यीशु का लड़कपन लुका २: ४१-५२ | 1

– Save This Page as a PDF–

येशु का लड़कपन

लुका २: ४१-५२



बारह साल के लड़के के रूप में जेरूसलम की यात्रा, चार
सुसमाचार में पाए गए उनके लड़कपन का एकमात्र खाता है। इसका उद्देश्य उनकी असाधारण आध्यात्मिक विकास को प्रदर्शित करके येशु के सेवा में परिवर्तन करना है। खाते से उनके दो विषयों का पता चलता है। पहला विषय यीशु की परमेश्वर के साथ अपने अनोखे संबंधों के बारे में बढ़ती जागरूकता है। यह विषय लुका २:४९ में चरमोत्कर्ष पर है जब यीशु ने घोषणा की कि वह डेविड के शहर में रहा क्योंकि उसे अपने पिता के घर में रहना था। हालाँकि, येशु ने अपने मानवीय माता-पिता (लूका २:५१) को प्रस्तुत करना जारी रखा, लेकिन अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञाकारिता ने सभी सांसारिक प्रतिबद्धताओं को पार कर लिया। दूसरा विषय ज्ञान में यीशु की वृद्धि है, जैसा कि मंदिर में यहूदी रब्बियों के साथ उनके संवाद में पता चला (यशायाह ११: २)। नतीजतन, येशुआ ने कम उम्र में अपनी मसीहाई साख का प्रदर्शन किया

नाज़रेथ के मौन वर्षों के रिकॉर्ड की कमी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के उच्च अवस्था के विपरीत है, जो कि हम यशुआ में पाते हैं जब उसने अपना सार्वजनिक सेवकाई शुरू किया था। हमें बड़े पैमाने पर यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ दिया जाता है कि कैसे उन्होंने अपनी जवानी के वर्षों के दौरान शिक्षण और उपदेश के अपने उपहारों का प्रयोग किया होगा। अंत में, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि उन्होंने न केवल अपने समय के वर्तमान मुद्दों के साथ बातचीत की, बल्कि यह कि उन्होंने महान विषय पर लंबे समय तक ध्यान दिया जो उनके सार्वजनिक सेवकाई के

Az – यीशु का लड़कपन लुका २: ४१-५२ | 2

संदेश का मूल बन गया। कई बार, वह उस पथरीले रास्ते पर चढ़ गया होगा, जो नाजारेथ के ऊपर पहाड़ी की ओर जाता था और ध्यान और प्रार्थना में घंटों तक लगा रहता था। जब वह कैना में एक शादी में अपने सेवकाई में हमारे क्षितिज पर उभरे (देखें Bq –येशु पानी को द्राक्षा रस बनाये), यह आध्यात्मिक शक्ति के पूर्ण वैभव के साथ था।